नवरत्नमालिका

हारनूपुर किरीट कुण्डल विभूषिता वयव शोभिनीं
कारणेशवर मौलि कोटि परिकल्प्यमान पद पीठिकाम् ।
कालकाल फणि पाश बाण धनु रङ्कुशा मरुण मेखलां
फाल भू तिलक लोचनां मनसि भावयामि परदेवताम् ॥ १॥

गन्धसार घनसार चारु नव नागवल्लि रसवासिनीं
सान्ध्यराग मधुरा धरा भरण सुन्दरानन शुचिस्मिताम् ।
मन्धरायत विलोचना ममल बालचन्द्र कृत शेखरीं
इन्दिरा रमण सोदरीं मनसि भावयामि परदेवताम् ॥ २॥

स्मेर चारु मुख मण्डलां विमल गण्डलम्बि मणि मण्डलां
हारदाम परिशोभमान कुच भार भीरुतनु मध्यमाम् ।
वीरगर्व हर नूपुरां विविध कारणेश वर पीठिकां
मारवैरि सहचारिणीं मनसि भावयामि परदेवताम् ॥ ३॥

भूरि भार धर कुण्डलीन्द्रमणि बद्ध भू वलय पीठिकां
वारिराशि मणिमेखला वलय वह्नि मण्डल शरीरिणीम् ।
वारिसारवह कुण्डलां गगन शेखरीं च परमात्मिकां
चारु चन्द्र रवि लोचनां मनसि भावयामि परदेवताम् ॥ ४॥

कुण्डल त्रिविध कोण मण्डल विहार षड्दल समुल्लसत्
पुण्डरीक मुख भेदिनीं च प्रचण्ड भानु भास मुज्ज्वलाम् ।
मण्डलेन्दु परिवाहि तामृत तरङ्गिणी मरुणरूपिणीं
मण्डलान्त मणि दीपिकां मनसि भावयामि परदेवताम् ॥ ५॥

वारणानन मयूरवाह मुखदाह वारण पयोधरां
चारणादिसुर सुन्दरी चिकुर शेकरी कृत पदाम्बुजाम् ।
कारणाधिपति पञ्चक प्रकृति कारण प्रथम मातृकां
वारणान्त मुख पारणां मनसि भावयामि परदेवताम् ॥ ६॥

पद्म कान्ति पद पाणिपल्लव पयोधरानन सरोरुहां
पद्मराग मणि मेखलावलय नीवि शोभित नितम्बिनीम् ।
पद्म सम्भव सदाशिवान्तमय पञ्चरत्नपद पीठिकां
पद्मिनीं प्रणव रूपिणीं मनसि भावयामि परदेवताम् ॥ ७॥

आगम प्रणव पीठिका ममल वर्ण मङ्गल शरीरिणीं
आगमावयव शोभिनी मखिल वेदसार कृतशेखरीम् ।
मूल मन्त्र मुख मण्डलां मुदित नादबिन्दु नवयौवनां
मातृकां त्रिपुरसुन्दरीं मनसि भावयामि परदेवताम् ॥ ८॥

कालिका तिमिर कुन्तलान्त घन भृङ्ग मङ्गल विराजिनीं
चूलिका शिखर मालिका वलय मल्लिका सुरभि सौरभाम् ।
वालिका मधुर गण्ड मण्डल मनोहरानन सरोरुहां
बालिका मखिल नायिकां मनसि भावयामि परदेवताम् ॥ ९॥

नित्यमेव नियमेन जल्पतां भुक्ति मुक्ति फलदा मभीष्टदाम् ।
शंकरेण रचितां सदा जपेन्नाम रत्न नवरत्न मालिकाम् ॥ १०॥

इति श्रीमच्छंकरभगवतः कृतौ नवरत्नमालिका संपूर्णा ॥